P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

डॉ. रामनिवास मानव के लघुकथा साहित्य में संक्रमित संस्कृति

अनीता रानी
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा

कविता चौधरी
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा

सारांश

डॉ. रामनिवास 'मानव' ने हरियाणा में रचित साहित्य को एक नई धारा देने का प्रयास किया है। यूं तो लघुकथा को नव्यतर विधा कहा जाता है किन्तु वैदिक काल से ही लघुकथाओं का प्रचलन है। रामनिवास मानव की लघुकथाओं में सांस्कृतिक परिवर्तन विभिन्न संस्कृतियों के तालमेल तथा नवीन ज्ञान के प्राप्त होने से जो पुराने सांस्कृतिक प्रतिमान को व्यर्थ सिद्ध कर देते हैं। व्यक्ति सांस्कृतिक परिवर्तन लाने के लिए सृजित होता है ताकि वह परिवर्तित होते हुए वातावरण की आवश्यकताओं को पूरा कर सके और इसके लिए तैयार हो जाए। 'स्टेटस', 'कसक', 'छत' और 'जड से कटा पेड़' लघुकथाओं के माध्यम से दिखाया गया है कि युवा वर्ग अपने संस्कारों को भूलकर पश्चिमी सभ्यता की ओर बड रहा है, जिस तरह पश्चिमी सभ्यता में बड़े–बूढों की देख–रेख करना संतान अपना उतरदायित्व नहीं मानती। साथ ही इन्हीं लघुकथाओं में यह भी दिखया है कि गांव लोग जब शहरों की ओर प्रस्थान करते है तो उनके रहन–सहन, रीति–रिवाजों में भी परिवर्तन आ जाता है जो संस्कृति का संक्रमण है। 'सास बहू' और 'त्रिया चरित्र' में भारतीय नारी जो कि पहले लज्जाशीलता और परिवार की देख–रेख करने को अपना दात्यित्व समझती थी लेकिन आज शिक्षित होने के साथ उसके रहन–सहन में भी परिवर्तन आ गया है। 'दिवाली की मिठास' में रिशतों के ठंडेपन, खोखलेपन और रक्त संबंधों में आई गिरावट को उकेरा गया है।

मुख्य शब्द : डॉ. रामनिवास मानव, हिन्दी साहित्य, लघुकथा।

प्रस्तावना

संस्कृति भारतवासियों के सम्मान और अस्मिता से ही निरंतर प्रवाहमान है। संस्कृति मानव की संस्कृतिहीन अवस्था को निरंतर श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बनाते हुए कुछ मूल्य, सिद्धांतों, मान्यताओं का सृजन और परिष्कार करती गई और इस प्रकार संस्कृति जो निरंतर अपने प्रवाह में बहती हुई परम्परागत मान्यताओं, विचारों और आदर्षे को तिरस्कृत करती हुई उनके स्थान पर कुछ नवीन् मान्यताओं और सिद्धातों से अनुप्रेरित हुई एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवेश हो जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध कार्य का उद्देश्य आज की संस्कृति में आ रहे बदलाव से परम्परागत मान्यताओं, विचारों और आदर्शों को तिरस्कृत होते दिखाना है।

संस्कृति का अर्थ

'संस्कृति' अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' के पर्याय के रूप में माना जाता रहा है। इस 'कल्चर' शब्द की व्युत्पति लैटिन भाषा की धातु 'कोलर' से निष्पन्न 'कुल्टुरा' शब्द से हुई, जिसका अर्थ है– पूजा करना तथा कृषि संबंधी कार्य सम्पादित करना।

डॉ. रामचंद्र वर्मा

"संस्कृति के अंर्तगत मन, रूचि, आचार–विचार, कला–कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास सूचक बातें आती हैं।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

"सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है, सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है, संस्कृति व्यक्ति के अंतर के विकास का।"

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

"संस्कृति मस्तिष्क का जीवन है।"

सवंमित संस्कृति

संक्रमित से भाव है कि एक अवस्था से धीरे–धीरे दूसरी अवस्था में परिवर्तित होना। समाज के सदस्य संस्कृति में लगातार होने वाले परिवर्तनों के

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साथ समायोजन करना सीखे उस प्रक्रिया को जिसके द्वारा व्यकित नवीन या उभरते हुए रिवाजों तथा मूल्यों को सीखे उसे संक्रमित संस्कृति कहा जाता है। दोनों प्रक्रियाएं सांस्कृतिक भीतरीकरण और संस्कृति संक्रमण की सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखती है। प्रत्येक समाज के लिए स्थायित्व तथा परिवर्तन दोनों आवश्यक हैं स्थायित्व की आवश्यकता है सांस्कृतिक धरोहर जो मूल्यों, प्रतिमानों, परम्पराओं, रीति–रिवाजों, कलाओं आदि में निहित है को बनाएं रखने के लिए। परिवर्तन की आवश्यकता इस कारण है कि समाज निष्क्रिया न हो जाए।

पीनोट–प्रत्येक दिन समाज को एक भीषण आक्रमण का सामना करना होता है। इसके अंदर असंख्य छोटे बर्बर पैदा होते हैं। वह सम्पूर्ण सामाजिक व्यस्था को शीघ्र उखाड़ फेंक सकते हैं तथा समाज की सब संस्थाओं को नष्ट कर सकते है, यदि उन्हें अच्छे ढ़ंग से अनुशासित और शिक्षित नहीं किया जायेगा।

पिछले डेढ़–सौ वर्षों में भारतीय समाज का सामंतवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ जो संघर्ष हुआ है, उससे जनता विकास एवं परिवर्तन की प्रक्रिया में एक संक्रमण के दौर से गुजरी है। उसका भारतीय साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। रामनिवास मानव ऐसे लघुकथाकार है जिनकी रचनाओं में यथार्थ,आदर्श और विवेक का गहरा पुट देखा जा सकता रामनिवास मानव ने लघुकथाओं में मध्यवर्गीय मनुष्य की विवशताओं मनोवृतियों और आम व्यवहार की विकृतियों को व्यक्त किया है। 'स्टेटस', और 'कसक' लघुकथा में परिवारों के टूटने की बात कहीं गई है, मां–बाप के प्रति प्रेम कम होता जा रहा है उनका रहन–सहन, खान–पान और पहरावे में बदलाव देखने को मिलता है।

रामनिवास मानव ऐसे लघुकथाकार है जिनकी रचनाओं में संक्रमित संस्कृति का पुट देखने को मिलता है। रामनिवास मानव की लघुकथाओं में सांस्कृतिक परिवर्तन विभिन्न संस्कृतियों के तालमेल तथा नवीन ज्ञान के प्राप्त होने से जो पुराने सांस्कृतिक प्रतिमान को व्यर्थ सिद्ध कर देते हैं। व्यक्ति सांस्कृतिक परिवर्तनलाने के लिए सृजित होता है ताकि वह परिवर्तित होते हुए वातावरण की आवश्यकताओं को पूरा कर सके और इसके लिए तैयार हो जाए कि वह अपना जीवन बदलते हुए परिवेश में बिना किसी कठिनाई के समायोजित कर सके। 'स्टेटस' लघुकथा में प्रभु गांव की संस्कृति को भूलता हुआ शहर की संस्कृति को अपना रहा है। साथ ही यह भी दिखाया है कि जो हमारी भारतीय संस्कृति में बड़ो आदर करण हमारा धरोहर है किन्तु पाश्चात्य देशें में बड़े–बूढ़ों की देखरेख संतान अपना उतरदायित्व नहीं मानती वहीं मावन ने आज के भारतीय समाज में भी दिखाया है, आज भावनाएँ और संवेदनाएं निर्मूल होती जा रही हैं प्रदर्शन ही स्टेटस के रूप में शेष रह गया है,'स्टेटस' लघुकथा में संक्रमित संस्कृति को देखा जा सकता है। जिसमें युवा वर्ग अपने आदर्शो को भूल कर गांव में रह रहे मां–बाप की चिंता न करते हुए शहर में स्टेटस के हिसाब से जीता है जब कि उसके मां–बाप उससे पैसों की उमीद लगाते हैं कि बेटा शहर में नौकरी करता है और इस साल तो कर्ज उतार ही देगें। लेकिन प्रभु मां–बाप को गांव में प्रस्थितियों से ही झूझते हुए छोडकर शहर चला जाता है–'काका हमेशा की तरह, नहर तक छोड़ने आए, तो उसने बात चलाई–

"इस बार तो कुछ नहीं बचा काका! शहर के बड़े खर्चे हैं, स्टेटस के हिसाब से रहना पड़ता है। फिर एक दिन कुन्नू ज़िद्द करने लगी, तो टी. वी. लेना पड़ गया।" लेकिन प्रभु अपने मां–बाप के प्रति आदर्शो को भूलकर शहर की नवसंस्कृति को अपना रहे है।

'कसक' लघुकथा में भी मानव ने एक ऐसे बेटे को दिखाया है जो पड़ लिख कर नौकरी क्या लग जाता है वह अपनी जड़ और ज़मीन से ही कट जाता है। श्रीमान के माध्यम से गिरते सामाजिक मुल्यों जिसमें टूटते परिवारों को दिखाया है जो संस्कृति में संक्रमण का उदाहरण है। एक बेटा अपने मां–बाप के प्रति सेवा भावों को भूलकर अपने मां–बाप को गांव में छोड़ कर शहर में चला जाता है–

'श्रीमान कभी–कभार ही घर आता है। पत्नी को गांव में परेशानी न हो, अंतः रास्ते में ससुराल छोड़ आता है।× × × × × × × × × × × ×× × × × × × × × × × × ×× × × × × × × × × × × × ×× × × × × × × × × × ×कल वह घंटे भर बाद ही जाने लगा, तो काका ने मन भारी कर कहा–"इतनू नगीच हुयां पाछै बी महनां–महनां मैं आवा सा। आतो रह्या कर बेट्टा! ब्हू नै बी साथ लियायाकर। हम कोई हमेस्या तो बैठ्या ना र्हां, इब तो साल–दो साल का सां।"

श्रीमान के रहन सहन में भी बदलाव देखने को मिलता है– "श्रीमान ओवरसियर लगा है, सिंचाई–विभाग में। तनख़ाह के इलावा भी मोटी इन्कम है। अब वह कपड़े के जूतों से लिबर्टी शूज़ तक और लट्ठे के कुर्ते–पाजामे से सफारी सूट तक पहुंच गया है।"

'जड़ कटा पेड़' लघुकथा में मानव दिखाया है कि लोग अपने सामाजिक रिशतों रीति–रिवाजों को भूल कर पैसे की दौड़ में शहर की ओर प्रस्थान कर रहें हैं, जिससे वह अपनी पुश्तैनी सभ्यता को भूल कर नए संस्कारो को अपना रहें हैं। "बनवारी के नौकरी लगते ही, छुटपन में, गांव छोड़ दिया था और उसके साथ रहते हुए शहर में ही पढे–बढे थे। वह पूरे शहरी हो गए हैं, लेकिन बनवारी के मन के आधे हिस्से में, आज भी, गांव बसता है।" इसमें मां–बाप का तो गांव और घर के प्रति लगाव है लेकिन बच्चों में इन भावनाओं का आभाव पाया जाता है।

'सास बहू' लघुकथा में मानव ने एक बहु के गिरते संस्कारों को दिखाया गया है। एक आदर्श बहु जो हमारे समाज में मानी जाती है जो कि अपने घर के प्रत्येक कार्य को बडी निष्ठा के साथ निभाती हुई बडों का सम्मान करती है लेकिनसंस्कृति के बदलते स्वरूप के साथ बहुओं के संस्कारों में भी परिवर्तन आ गया जो संस्कृति के संक्रमण का उदाहरण है– "मां, देर तक सोने की आदत है, जल्दी ही समय पर उठने लगेगी। सुबह की चाय तुम ही बना दिया करों"× × × × × × × × × × ×× × × × × × × × × × × × ×× × × × × × × × × × × ×× × × × × × × × × × × ×

"मां, कविता को अभी बर्तन धोने का अभ्यास नहीं है। इसलिए तुम धो लिया करो, पहले भी तो धोती ही थी।" इस लघुकथा में बहू के गिरते संस्कारों को दिखाया गया है। लघुकथा 'त्रिया–चरित्र' में भी मानव ने एक नारी का संस्कारों के प्रति दिखावा मात्र को दिखाया है। जो नारी अपने पहरावे में अपनी सभ्यता को समाय हुए थी वही नारी आधुनिक पश्चिमी सभ्यता को अपनाते हुए अपने संस्कारों और पहरावे को बदलती जा रही है जो संस्कृति में संक्रमण को दिखाता है– "घुटनों तक मुड़ी जींस पहनकर, जब वह मडगार्ड रहित मोटरसाइकिल को, साठ–सतर किलोमीटर की गति से, विश्वविद्यालय की सड़कों पर दौड़ाती थी, तो लड़के 'दादी–दादी' कहकर चिल्लाने लगते थे। कुछ मनचले तो तरह–तरह की फबतियां कसने या सीटियां बजाने से भी बाज नहीं आते थे।"

'दिवाली की मिठास' में रिशतों के ठंडेपन, खोखलेपन और रक्त संबंधों में आई गिरावट को उकेरा गया है। मानव ने दिखाया है कि जिसके पास पैसा है उन्हीं से लोगों का प्रेम है जो रिश्तो में गिरावट का कारण है। इस लघुकथा में दिखाया है कि जो बच्चों के लिए ज्यादा समान लाता है बच्चे भी उसी से प्रेम करते हैं– 'घर पहुंचते ही छोटे भाई–बहनों ने उसे घेर लिया, पूछा– "हमारे लिए क्या लाए हो भैया ?"

"अधिक कुछ नहीं, ये मिठाइयां हैं, बस।"

जब मंझले भैया उनके लिए अधिक समान लाते हैं तो वह कहते हैं–

"हां, तभी तो कितनी सारी चीज़े लाए हैं, हमारे लिए। मंझले भैया अच्छे! मंझले भैया अच्छे!!"

'छत' प्रतीकात्मक लघुकथा है जिसमें छत बड़े बुजुर्गों का प्रतीक है और दीवारे उनकी संतान का। जिस प्रकार दीवारे छत को बोझ समझती हैं उसी प्रकार आज के बदलते दौर में संतान अपने माता–पिता को बोझ समझती हैं। मानव ने यह कहने का प्रयास किया है कि जब तक संयुक्त परिवार है, तो वह घर है अन्यथा वह खंड्र बनकर रह जाता है। बड़े बुजुर्ग अपनी संतान के जीवन में अपने महत्व को समझाते हैं उसी प्रकार छत दीवारों को समझाती है–

"मैं हट जाऊंगी, तो तुम निरर्थक हो जाओगी। तुम मकान तभी तक हो, जब तक मैं तुम्हारे कंधों पर हूं।" रूंधे गले से, छत ने, पुनः समझाया।

दीवारे इसपर भी नहीं मानीं। अन्ततः छत धराशायी हो गई। यह देख, दीवारों की खुशी का, पार न था।"

उसी प्रकार आज के बदलते दौर में संतान अपने माता–पिता से अलग रहने में अपनी खुशी मानती है वह यह भूल जाते है कि अपने संस्कारों से दूर होकर वह भी

'आहत दीवारें ज़मीन पर बिछ गई। छत की अधखुली आंखें अब भी उन पर टिकी थी, जैसे कह रही हों– "मैं तुम्हें सच कह रही थी ना नादान बच्चियो!"

निष्कर्ष

रामनिवास की लघुकथाओं के सभी पात्रों में संक्रमित संस्कृति देखने को मिलती है और मानव मूल्य का ह्रास हो रहा है।'स्टेटस' , 'कसक' ,'छत' आदि लघुकथाओं के माधयम से दिखाया है कि युवा वर्ग पश्चिमी सभ्यता की ओर जा रहा है। वह अपने जीवन के रहन–सहन में परिवर्तन ला रहा है जिससे संस्कृति संक्रमित हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मधूलिका सुहाग– डॉ. रामनिवास 'मानव' का रचना संसार पृ. 169-170*
2. *अमित प्रकाशन, के. बी. 97, कविनगर, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश*
3. *माथुर एस. एस.–शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, पृ. 65,*
4. *अगरवाल पब्लिकेशन्स हैड ऑफिस : 28/115, आगरा*
5. *मानव रामनिवास–लघुकथा संग्रह 'इतिहास गवाह है' लघुकथा 'जड़ से कटा पेड़', पृ.15*
6. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
7. *मानव रामनिवास –लघुकथा संग्रह 'इतिहास गवाह है' लघुकथा 'दिवाली की मिठास', पृ.35*
8. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
9. *मानव रामनिवास–लघुकथा संग्रह 'इतिहास गवाह है' लघुकथा 'छत', पृ.71*
10. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
11. *मानवरामनिवास–लघुकथा संग्रह 'घर लौटते कदम'लघुकथा 'स्टेटस', पृ.19*
12. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
13. *मानव रामनिवास–लघुकथा संग्रह 'घर लौटते कदम'लघुकथा 'कसक', पृ.20*
14. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
15. *मानव रामनिवास–लघुकथा संग्रह 'घर लौटते कदम'लघुकथा 'त्रिया चरित्र', पृ.43*
16. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
17. *मानव रामनिवास–लघुकथा संग्रह 'घर लौटते कदम'लघुकथा 'सास बहू', पृ.29*
18. *अमित प्रकाशन, के. बी.97, कविनगर, गाज़ियाबाद 201002*
19. *सहगल मनमोहन– गुरू ग्रंथ साहिबः एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण, पृ.77*
20. *भाषा विभाग, पंजाब पटियाला, 1971*
21. *सुनीता कुमारी–नरेश मेहता के काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन, पृ. 4*
22. *पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2002*
23. *http://hdi.handle.net/10603/114785*